प्रश्न बैंक (10.1.2. भारत में राष्ट्रवाद)

2 अंक वाले प्रश्न:-

प्रश्न 1- साइमन कमीशन को भारत क्यों भेजा गया था ?
उत्तर-(i) भारतीय संवैधानिक व्यवस्था की कार्यप्रणाली की जांच कर सुधार हेतु सुझाव देने के लिए।
(ii) भारतीय क्रांतिकारी नेताओं पर मुकदमा चलाने के लिए

प्रश्न 2- सितंबर 1932 के पूना पैक्ट के किन्हीं दो प्रावधानों को लिखिए?
या
1932 के पूना पैक्ट पर विचार व्यक्त कीजिए।
या
पूना समझौते की मुख्य विशेषताओं का वर्णन कीजिए।

उत्तर-(i)डॉक्टर अंबेडकर ने 1930 में दलितों को दलित वर्ग एसोसिएशन में संगठित किया तथा द्वितीय गोलमेज सम्मेलन में दलितों के लिए अलग निर्वाचन क्षेत्रों की मांग की।
(ii) सन 1932 में पूना पैक्ट समझौते के द्वारा अलग निर्वाचन क्षेत्रों के मुद्दे का हल गांधीजी और अंबेडकर की आपसी सहमति से किया गया इसके अंतर्गत दमित वर्गों को प्रांतीय एवं केंद्रीय विधान परिषदों में आरक्षित सीटें मिल गई।

प्रश्न 3- सत्याग्रह से क्या अभिप्राय है ?
या
सत्याग्रह के विचार का क्या मतलब है?
या
गांधीजी के अनुसार सत्याग्रह के विचार की व्याख्या कीजिए।
उत्तर- महात्मा गांधी ने सत्याग्रह के रूप में जन आंदोलन का एक नया तरीका अपनाया यह तरीका इस सिद्धांत पर आधारित था कि यदि कोई सही मकसद से लड़ रहा है तो उसे अपने ऊपर अत्याचार करने वाले से लड़ने के लिए ताकत की जरूरत नहीं होती है गांधी जी का विश्वास था कि एक सत्याग्रही अहिंसा के द्वारा ही अपनी लड़ाई जीत सकता है ।

MUKUTclasses

प्रश्न4--इनलैंड इमीग्रेशन एक्ट क्या था ?
उत्तर -बागानों में काम करने वाले मजदूरों को इनलैंड इमीगेशन एक्ट के तहत बिना इजाजत बागान से बाहर जाने की अनुमति नहीं थी।

प्रश्न5--असहयोग आंदोलन के दौरान विदेशी वस्तुओं के बहिष्कार करने के मुख्य दो कारण लिखिए ?
उत्तर - (i)विदेशी वस्तु में पश्चिमी अर्थव्यवस्था और सांस्कृतिक प्रभुत्व का प्रतीक थी
(ii) यह भारत में अंग्रेजों की दमनकारी शासन का प्रतीक भी समझी जाने लगी

प्रश्न 6--13 अप्रैल 1919 को जनरल डायर ने जलियांवाला बाग में शांतिपूर्ण भीड़ पर गोली क्यों चलाई कोई दो कारण लिखिए ?
उत्तर -(i) जनरल डायर अमृतसर में मार्शल लॉ को सख्ती से लागू करना चाहता था । वह सत्याग्रहियों के दिमाग में आतंक और भय पैदा करना चाहता था ।
(ii)ब्रिटिश सरकार की नजरों में महत्व प्राप्त करना चाहता था ।

प्रश्न 7- भारतीय राष्ट्रवाद के उदय के दो कारण लिखिए ?
उत्तर -(i)पाश्चात्य शिक्षा- आधुनिक पाश्चात्य शिक्षा तथा चिंतन ने भारतीय शिक्षित वर्ग को विदेशी शासन के दुष्परिणामों तथा शोषण की जानकारी प्रदान की। इसी के द्वारा शिक्षित वर्ग के सोचने समझने के दृष्टिकोण तथा हितों में समानता आने से उन में राष्ट्रीय भावना का उदय हुआ।
(ii) साम्राज्य के विरुद्ध घृणा सन 1857 में हुई क्रांति को कुचलने के पश्चात अंग्रेजों ने भारतीयों पर अनेक प्रकार के अत्याचार किए जिनसे भारतीय लोग अंग्रेजों से घृणा करने लगे ।

प्रश्न 8- महात्मा गांधी द्वारा चलाए गए दो सत्याग्रह आंदोलनों का वर्णन कीजिए ?
उत्तर (i) सन 1916 में बिहार के चंपारण जिले में दमनकारी बागान व्यवस्था के खिलाफ किसानों को संघर्ष के लिए प्रेरित किया ।
(ii) सन 1917 में गुजरात के खेड़ा जिले में किसानों की मदद के लिए सत्याग्रह का आयोजन किया ।

प्रश्न 9 गांधी जी द्वारा तैयार किए गए स्वराज झंडे की किन्हीं दो विशेषताओं का उल्लेख कीजिए ?
उत्तर- (i) 1921 में गांधी जी ने स्वराज झंडे को तैयार किया। इसमें तीन (रंग लाल, हरा सफेद) थे तथा इसके मध्य में चरखा बना हुआ था जो गांधी जी के स्वयं सहायता के विचार का प्रतिनिधित्व करता था।
(ii) रैलियों के दौरान झंडे को लेकर चलना तथा उसे ऊंचा रखना विरोध का प्रतीक था ।

प्रश्न 10 चंपारण में किसान विद्रोह के क्या कारण थे ?
उत्तर- गांधीजी ने सन 1917 में चंपारण आंदोलन शुरू किया। ब्रिटिश सरकार के द्वारा किसानों को नील की खेती करने और उसे कम कीमत पर बेचने के लिए मजबूर करने के विरोध में यह सत्याग्रह हुआ ।

प्रश्न11- गांधी इरविन समझौता की दो प्रमुख विशेषताएं बताइये ?
उत्तर-गांधी इरविन समझौता की प्रमुख विशेषताओं का वर्णन निम्नलिखित किया जा सकता है
(i) कांग्रेस ने सविनय अवज्ञा आंदोलन को स्थगित कर दिया और दूसरे गोलमेज सम्मेलन में भाग लेने की सहमति दे दी।
(ii) अंग्रेजी सरकार ने दमन की नीति छोड़ा ने बंदियों को रिहा करने का निर्णय ले लिया ।

प्रश्न 12-- खिलाफत आंदोलन पर संक्षिप्त टिप्पणी लिखिए ?
उत्तर-- खिलाफत शब्द खलीफा से निकला हुआ है, जो ऑटोमन तुर्की का सम्राट होने के साथ-साथ इस्लामिक विश्व का आध्यात्मिक नेता भी था । प्रथम विश्व युद्ध में तुर्की की हार हुई थी। यह अफवाह फैल गई कि तुर्की पर एक अपमानजनक संधि सौंपी जाएगी, इसलिए खलीफा की तात्कालिक शक्तियों की रक्षा के लिए मार्च 1919 में अली बंधुओं द्वारा मुंबई में एक खिलाफत समिति का गठन किया गया

प्रश्न 13-दांडी मार्च पर संक्षिप्त टिप्पणी लिखिए ?
उत्तर- दांडी मार्च या नमक आंदोलन को गांधी जी ने 12 मार्च 1930 को शुरू किया। उनके साथ 78 अनुयाई भी शामिल थे। उन्होंने 24 दिन तक चलकर साबरमती से दांडी तक की 240 मील की दूरी तय की, 6 अप्रैल 1930 को गांधी जी ने मुट्ठी भर नमक उठाकर प्रतीकात्मक रूप से इस कानून को तोड़ा 9 मार्च से सविनय अवज्ञा आंदोलन की शुरुआत भी की गई ।

<u>3 अंक वाले प्रश्न :-</u>

प्रश्न 14- सविनय अवज्ञा आंदोलन में महिलाओं की क्या भूमिका का वर्णन कीजिए ?
उत्तर: सविनय अवज्ञा आंदोलन में महिलाओं की भूमिका :
(i)महिलाओं ने बहुत बड़ी संख्या में इस आंदोलन में भाग लिया ।
(ii) उन्होंने विरोध रैलियों में भाग लिया नमक बनाया तथा विदेशी कपड़ों एवं शराब की दुकानों पर धरने दिए ।
(iii) कई महिलाएं इस आंदोलन के दौरान जेल भी गई।

प्रश्न 15 भारत में राष्ट्रवाद की भावना को विकसित करने में विभिन्न सांस्कृतिक प्रक्रियाओं ने किस प्रकार महत्वपूर्ण भूमिका निभाई ?
उत्तर- बहुत तरह की सांस्कृतिक प्रक्रियाओं से विभिन्न समुदायों क्षेत्रों या भाषा के लोग अपनेपन की भावना विकसित कर पाने में सफल रहे। इनमें से कुछ तत्व निम्नलिखित हैं:
(i) चित्र:- अवनींद्र नाथ टैगोर ने अपनी प्रसिद्ध भारत माता पेंटिंग की रचना कि उसने भारत माता को एक दैवीय रूप में दर्शाया। इस चित्र के प्रति समर्पण की भावना लोगों के राष्ट्रवादी ताकि पहचान बन गई थी।

(ii) गीत एवं लोक कथाएं:- अट्ठारह सौ सत्तर के दशक में बंकिम चंद्र चटर्जी द्वारा मातृभूमि को समर्पित एक गीत जिससे बंगाल में स्वदेशी आंदोलन में खूब गाया गया ।
(iii) झंडे बंगाल में स्वदेशी आंदोलन के दौरान एक तिरंगे हरा पीला लाल झंडे को डिजाइन किया गया था ।1921 में गांधी जी ने भी स्वराज झंडे का डिजाइन तैयार किया। झंडे लेकर चलना तथा रैलियों के दौरान इसे ऊंचे रखना सरकार की अवजा का प्रतीक बन चुका था।

प्रश्न 16– 19वीं शताब्दी में भारत में राष्ट्रवाद के विकास में किन-किन कारणों ने योगदान दिया ?
उत्तर:
(i) औपनिवेशिक दमन-अंग्रेजों ने भारत के प्रत्येक पक्ष में अपनी दमनकारी नीतियों के द्वारा भारतीयों के जीवन को नरक बना दिया था। उद्योगपति, व्यापारी, जमीदार, छोटे किसान, शिक्षित बेरोजगार और समाज का प्रत्येक वर्ग आकुल था।
(ii) भारतीयों में जागृति का उद्भव हो रहा था, उन्हें अंग्रेजों की दमनकारी एवं भेदभाव पूर्ण नीति का आभास होने लगा था।
(iii)महात्मा गांधी का प्रभाव भारत की राजनीति में महात्मा गांधी अपने सत्याग्रह और अहिंसा के अचूक अस्त्रों के साथ अंग्रेजों को भारत छोड़ने के लिए मजबूर करने लगे थे। भारतीयों के जनमानस पर इसका बहुत अच्छा प्रभाव पड़ा और अंग्रेजों की भारत विरोधी नीतियों के प्रति वे जागृत हो गए।

प्रश्न 17 सविनय अवज्ञा आंदोलन में विभिन्न सामाजिक समूह के योगदान को स्पष्ट कीजिए।
उत्तर- (i)अमीर किसान व्यापार में मंदी तथा गिरती हुई कीमतों से सर्वाधिक प्रभावित होने के कारण उनकी राजस्व को कम करने की मांग को ठुकरा दिया गया अतः उन्होंने बड़ी संख्या में बहिष्कार कार्यक्रमों में हिस्सा लगरीब किसानों के लिए किराया चुकाना मुश्किल हो गया था। वे चाहते थे उन्हें जमीदारों को जो भाड़ा चुकाना था उसे माफ कर दिया जाए|
(॥) औद्योगिक मजदूर वर्ग ने कम वेतन तथा कार्य करने की खराब परिस्थितियों के विरोध में सविनय अवज्ञा आंदोलन में भाग लिया ।
(iii) महिलाओं ने राष्ट्र सेवा को अपना एक पवित्र कर्तव्य समझकर आंदोलन में भागीदारी की।

प्रश्न 18- रौलट एक्ट क्या था ? भारतीयों ने इस अधिनियम का विरोध किस प्रकार किया ?
उत्तर- रोलेट एक्ट ब्रिटिश सरकार द्वारा 1919 में लागू किया गया एक दमनकारी कानून था। इस कानून के जरिए सरकार को राजनीतिक गतिविधियों को कुचलने और राजनैतिक कैदियों को 2 साल तक बिना मुकदमा चलाए जेल में बंद रखने का अधिकार मिल गया था। भारतीय लोगों ने नियमित तरीके से इस कानून को नकार दिया। विभिन्न शहरों में रैली जुलूस ओं का आयोजन किया गया रेलवे वर्कशॉप में कामगार हड़ताल पर चले गए तथा कार्यालय को बंद कर दिया गया। गांधी जी ने 6 अप्रैल 1919 को इस अन्यायपूर्ण कानून के खिलाफ हड़ताल की शुरुआत की डॉ सत्यपाल तथा सैफुद्दीन किचलू ने अपनी गिरफ्तारी आदि अमृतसर के जलियांवाला बाग में एक शांतिपूर्ण विरोध रैली का आयोजन किया गया। इन नेताओं की गिरफ्तारी के विरोध में बैठक के दौरान जलियांवाला बाग हत्याकांड हुआ जिसमें सैकड़ों निर्दोष निर्दोष लोगों की जाने गई पूरे देश में इसका व्यापक विरोध हुआ ।

प्रश्न 19 गांधी जी ने असहयोग आंदोलन को वापस लेने का निर्णय क्यों किया ?

या

उन परिस्थितियों की व्याख्या कीजिए जिनमें महात्मा गांधी ने सविनय अवज्ञा आंदोलन वापस लेने का निर्णय किया।

या

महात्मा गांधी ने सविनय अवज्ञा आंदोलन को वापस लेने का निर्णय क्यों किया? स्पष्ट कीजिए।

उत्तर- सन 1920 में गांधी जी ने असहयोग आंदोलन का शुभारंभ किया था, लेकिन सन 1922 में गोरखपुर के चौरी चौरा में हिंसक घटना हुई, जिसके चलते भीड़ ने पुलिस थाने को आग लगा दी, जिसमें 22 पुलिसकर्मी जलकर शहीद हो गए। इस घटना के बाद महात्मा गांधी ने असहयोग आंदोलन को वापस लेने का निर्णय किया।

5 अंक वाले प्रश्न:-

प्रश्न 20 सन 1947 की स्वतंत्र भारत की कुछ समस्याओं का विश्लेषण कीजिए जिनका उन्हें सामना करना?

उत्तर -सन 1947 में जब भारत स्वतंत्र हुआ तो उसे एक अनेक समस्याओं का सामना करना पड़ा। स्वतंत्र भारत के समक्ष जो समस्याएं उमरी उनमें से निम्नलिखित का वर्णन किया जा सकता है:-

(i) राजनीतिक स्वतंत्रता को डर-भारत स्वतंत्र होने के पश्चात अंग्रेजों से तो मुक्त गया था, परंतु तब संसार दो बड़े राजनीतिक गुटों में विभाजित दिखाई। एक अमेरिकी गुड और दूसरा सोवियत गुट। भारत इन में से किसी एक गुट में शामिल होकर अपनी राजनीतिक स्वतंत्रता खोना नहीं चाहता था।

(ii)आर्थिक पिछड़ापन स्वतंत्रता के पश्चात भारत ने अब अपने आप को आर्थिक रूप से पिछड़ा हुआ पाया देश कृषि प्रधान होते हुए भी भारतीय किसानों के पास पुराने उपकरण थे उद्योग की दृष्टि से भारत अब भी काफी पीछे था। अपनी आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए अन्य देशों की सहायता पर निर्भर रहना पड़ता था।

(iii) सामाजिक त्रुटियां स्वतंत्रता के पश्चात भारत में अनेक सामाजिक त्रुटियां भी एक बड़ी समस्या थी। समाज आधुनिकता से दूर रूढ़िवाद से ग्रस्त तथा दहेज प्रथा, बाल पर्दा निर्धनता आदि भारत में विद्यमान सामाजिक त्रुटियां थी।

प्रश्न 21- प्रथम विश्व युद्ध ने भारतीय राष्ट्रीय आंदोलन के विकास में इस प्रकार योगदान दिया?

उत्तर– (i) प्रथम विश्व युद्ध सन 1914 में आरंभ हुआ था इंग्लैंड ने इस युद्ध में भारत को भी लगा दिया था जिसके कारण भारत में एक नई आर्थिक परिस्थिति पैदा हो गई रक्षा व को पूरा करने के लिए कर दे दिए गए इन कदमों की भरपाई के लिए भारतीयों पर टैक्स बढ़ा दिया गया।

(ii)ग्रामीण नव युवकों को जबरदस्ती सेना में भर्ती किया जा रहा था इससे जनसाधारण में आक्रोश की भावना उत्पन्न हो गई दूसरी ओर फ्लू महामारी भी फैल गई थी।

(iii) एक और विश्व युद्ध के कारण महंगाई बढ़ गई, तो दूसरी ओर युद्ध में भाग लेने वाले लाखों सिपाहियों की मौत ने विदेशी साम्राज्य की नींव हिला दी। राष्ट्रीय आंदोलन देश के कोने कोने तक फैल गया था।

प्रश्न 22- प्रथम विश्वयुद्ध का भारत की आर्थिक परिस्थितियों पर क्या प्रभाव पड़ा ?

उत्तर- (i) प्रथम विश्व युद्ध 1914 से 1918 तक चला। इस कारण भारतीयों पर भयंकर आर्थिक बोझ पड़ा सीमा शुल्क तथा आयकर बढ़ गया। कीमतें आसमान छूने लगी। आम आदमी के लिए दो वक्त की रोटी का जुगाड़ कठिन हो गया। नष्ट हो गई थी तथा खाद्यान्न की कीमतों में बहुत वृद्धि हो गई थी।

(ii) रूस में साम्यवादी सरकार की स्थापना का भी राष्ट्रीय आंदोलन पर बड़ा अच्छा प्रभाव पड़ा, क्योंकि रूस ने अपने अधीन सभी देशों को स्वतंत्र कर दिया था। अतः भारतीय स्वतंत्रता के आंदोलनकारियों को इससे नैतिक बल मिला ।

(iii) विश्व युद्ध में तुर्की की हार ने भारतीय मुसलमानों को अंग्रेजों के विरुद्ध कर दिया। भारतीय जनसाधारण की आशाओं पर पानी फिर गया। युद्ध के पश्चात महंगाई और अंग्रेजों के अत्याचार समाप्त नहीं हुए इससे हिंदू मुस्लिम एकता सुदृढ हुई और लाख भारतीय स्वतंत्रता संग्राम से गए।

प्रश्न 23-- गांधी जी राष्ट्रीय आंदोलन को कैसे जन आंदोलनों में परिवर्तित किया ?

उत्तर- (i) गांधी जी के व्यक्तित्व एवं जीवन शैली का लोगों के मस्तिष्क पर गहरा प्रभाव, जिससे एक राष्ट्रीय आंदोलन को व्यापक आंदोलन बदलने में सहायता मिली।

(ii) गांधीजी की सादगी और महात्माओं जैसी जिंदगी तथा जनसमूह को अपनी बात समझा पाने के कौशल ने उन्हें बहुत लोकप्रिय बना दिया। उनका विवादित नेतृत्व एवं आकर्षक व्यक्तित्व ।

(iii) उनकी अहिंसक सत्याग्रह की नीति, उनके द्वारा शुरू किए गए विभिन्न सामाजिक सुधार एवं छुआछूत के खिलाफ संघर्ष और हिंदू मुस्लिम एकता के प्रति उनकी प्रतिबद्धता |

प्रश्न 24 सविनय अवज्ञा आंदोलन असहयोग आंदोलन से किस प्रकार भिन्न था? कोई तीन कारण लिखिए।

या

सविनय अवज्ञा आंदोलन असहयोग आंदोलन से किस प्रकार भिन्न था? कथन की पुष्टि उदाहरण सहित कीजिए।

उत्तर– (i)असहयोग आंदोलन जलियांवाला बाग के नरसंहार के रूप में शुरू किया गया था लेकिन सविनय अवज्ञा आंदोलन का प्रारंभ साइमन कमीशन के आने के विरोध में हुआ था ।

(ii) असहयोग आंदोलन का उद्देश्य स्वराज्य स्वशासन था लेकिन सविनय अवज्ञा आंदोलन का उद्देश्य पूर्ण स्वराज था।

(iii) असहयोग आंदोलन में भारत के सभी वर्गों ने भाग लिया था लेकिन सविनय अवज्ञा आंदोलन में दलित वर्ग ने पूर्ण सहयोग नहीं दिया।

प्रश्न 25– कांग्रेस के 1929 के अधिवेशन की विशेषताओं का वर्णन कीजिए ?

उत्तर- दिसंबर 1929 के कांग्रेस के लाहौर अधिवेशन की मुख्य विशेषताएं निम्नलिखित हैं।

(i) दिसंबर 1929 में जवाहर लाल नेहरू की अध्यक्षता में कांग्रेस के लाहौर अधिवेशन में भारत के लिए पूर्ण स्वराज्य संपूर्ण स्वतंत्रता की आधिकारिक रूप से घोषणा की गई।

(ii) यह घोषित किया गया कि 26 जनवरी 1930 को स्वतंत्रता दिवस के रूप में मनाया जाएगा।

(iii) इस तिथि को लोगों से आवाहन किया गया कि वह पूर्ण स्वराज के लिए संघर्ष करने की शपथ लेंगे किंतु इस उत्सव में अधिक लोगों ने दिलचस्पी नहीं दिखलाई। ऐसी स्थिति में गांधी जी ने स्वतंत्रता के इस अमूर्त विचार को रोजमर्रा की जिंदगी के ठोस मुद्दों से जोड़ने का प्रयास शुरू किया। बाद में यही प्रयास सविनय अवज्ञा आंदोलन के रूप में सामने आया ।

प्रश्न 26-अल्लूरी सीताराम राजू कौन से असहयोग आंदोलन में उनका योगदान बताइए ?

या

अल्लूरी सीताराम राजू कौन थे विद्रोहियों को गांधी जी के विचारों से प्रेरित करने में उनकी भूमिका को स्पष्ट कीजिए।

उत्तर- अल्लूरी सीताराम राजू एक आदिवासी नेता थे जिन्होंने पहाड़ी इलाकों में रहने वाले आदिवासी लोगों को अंग्रेजी सरकार के अन्याय पूर्ण एवं अत्याचार पूर्ण व्यवहार के विरुद्ध हथियार उठाने के लिए प्रोत्साहित किया। उन्होंने आदिवासियों को गांधी जी के नेतृत्व में शुरू किए गए असहयोग आंदोलन में बढ़-चढ़कर भाग लेने के लिए प्रेरित किया।

उन्होंने लोगों को खादी पहनने शराब छोड़ने और महात्मा गांधी द्वारा शुरू किए गए असहयोग आंदोलन में बढ़-चढ़कर भाग लेने के लिए कहा, परंतु उनका विश्वास था कि अंग्रेज केवल बल प्रयोग द्वारा ही भारत से निकाले जा सकते हैं। ब्रिटिश सरकार ने उन्हें पकड़कर 1924 में फांसी पर लटका दिया।

प्रश्न 27. गांधीजी ने प्रस्तावित रॉलट एक्ट (1919) के विरुद्ध एक राष्ट्रव्यापी सत्याग्रह चलाने का निर्णय क्यों लिया? इसका विरोध किस प्रकार किया गया? व्याख्या कीजिए। (2018-CBSE Comptt)

उत्तर- **(1) गांधीजी ने प्रस्तावित रॉल्ट एक्ट के विरुद्ध एक राष्ट्रव्यापी सत्याग्रह चलाने का निर्णय लिया क्योंकि** :

(i) इस कानून को इम्पीरियल लेजिस्लेटिव काउंसिल ने बहुत जल्दबाजी में पारित कर दिया था।

(ii) इस कानून ने सरकार को राजनीतिक गतिविधियाँ को कुचलने का व्यापक अधिकार दे दिया।

(iii) इससे सरकार को राजनीतिक कैदियों को दो साल तक बिना मुकदमा चलाए जेल में बंद रखने का अधिकार मिल गया था।

(iv) इस कानून का भारतीय सदस्यों ने विरोध किया था।

(2) इसका विरोध निम्नलिखित विधियों द्वारा किया गया था :

(i) विभिन्न शहरों में रैली-जुलूसों का आयोजन किया गया। रेलवे वर्कशॉप्स एवं कार्यालयों में कामगार हड़ताल पर चले गए।

(ii) अमृतसर के जलियाँवाला बाग में एक शांतिपूर्ण जुलूस आयोजित की गई थी।

(iii) गांधीजी ने 6 अप्रैल 1919 को इस अन्यायपूर्ण कानून के खिलाफ हड़ताल का आयोजन किया।

(iv) संचार, रेलवे, टेलिग्राफ लाइनें बाधित की गई।

प्रश्न 28. ख़िलाफत आंदोलन की व्याख्या कीजिए। महात्मा गांधी ने ख़िलाफ़त आंदोलन का समर्थन करना महत्त्वपूर्ण क्यों समझा ? (2016-F8AFSDT, DHJB8ZA; 2015-25TVI7H)

अथवा

गांधी जी ने ख़िलाफत आंदोलन को समर्थन देने का निर्णय क्यों लिया? (2018-DoEm)

अथवा

1919 में प्रस्तावित रॉलेट एक्ट के ख़िलाफ़ एक राष्ट्रव्यापी सत्याग्रह शुरू करने का गांधीजी ने फैसला क्यों किया ? व्याख्या कीजिए। (2016-NSOF12; 2014-Outside Delhi)

अथवा

ख़िलाफ़त आंदोलन के पीछे के मुद्दे को स्पष्ट कीजिए। (2016 - XJRQM8Z; 2014-ABWRI6K)

उत्तर-(1) ख़िलाफ़त आंदोलन अली भाइयों मुहम्मद अली और शौकत अली ने 1919 ई. में शुरू किया क्योंकि मित्र राष्ट्रों ने तुर्की को पराजित करके उसकी बहुत-सी बस्तियों को आपस में बड़े अन्यायपूर्ण ढंग से बाँट लिया।
(2) इसलिए महात्मा गांधी और अन्य कांग्रेस नेताओं ने ख़िलाफ़त आंदोलन को पूर्ण समर्थन दिया।
(3) 1919 में पंजाब के लोगों के साथ अत्याचारपूर्ण व्यवहार के विरोध में महात्मा गांधी ने असहयोग आंदोलन शुरू किया।
(4) शीघ्र ही, ये दोनों आंदोलन मिल गए और सर्वत्र हिन्दू-मुसलमानों में एक नई चेतना दौड़ गई। शिक्षा संस्थानों का बहिष्कार होने लगा। सरकार को कर देना बंद हो गया, विधान मंडलों के चुनाव का बहिष्कार किया गया। भारतीयों ने सरकारी नौकरियों से त्याग-पत्र देने शुरू कर दिए।
(5) अब अंग्रेजों के खिलाफ जन-आंदोलन शुरू हो गया और लोगों में पैमाने पर राष्ट्रीयता की भावना और अंग्रेजी शासन के विरुद्ध लहर दौड़ी।

प्रश्न 29. 1920 के दशक के अंतिम वर्षों में राजनीतिक स्थिति को रूप देने वाले विभिन्न घटकों का वर्णन कीजिए। (Imp.)

उत्तर-(1) रॉलट एक्ट तथा जलियाँवाला बाग के विरुद्ध सत्याग्रह आंदोलन शहरों तक ही सिमटा रहा।
(2) अंग्रेजों की सत्ता समाप्त करने के लिए महात्मा गांधी ने एक देशव्यापी आंदोलन करने की योजना बनायी। लेकिन, उन्हें मालूम था कि हिंदू-मुस्लिम एकता के बिना कोई भी योजना सफल नहीं हो सकती।
(3) महात्मा गांधी ने इस एकता को बनाने के लिए मुस्लिम ख़िलाफत आंदोलन को समर्थन देना शुरू कर दिया।

प्रश्न 30. 'प्रथम विश्व युद्ध' ने भारत में 'राष्ट्रीय आंदोलन' को बढ़ावा देने में किस प्रकार सहायता की? किन्हीं चार तथ्यों की व्याख्या कीजिए ।

अथवा

भारत में राष्ट्रीय आंदोलन के विकास में प्रथम विश्वयुद्ध ने कैसे मदद की? वर्णन कीजिए।

उत्तर- प्रथम विश्व युद्ध ने भारत में राष्ट्रीय आंदोलन के विकास में निम्न तरीकों से सहायता की
(1) अत्यधिक मात्रा में आदमी तथा वस्तुओं की क्षति ने भारत में नई राजनीतिक तथा आर्थिक परिस्थितियाँ पैदा कीं।
(2) युद्ध के दौरान गाँवों में रहने वाले लोगों को जबरन सेना में भर्ती किया गया तथा इनसे बेगार करवाया गया। इससे भारतीयों के बीच वृहत स्तर पर असंतोष फैला।
(3) युद्ध के कारण सरकार को हथियारों पर बहुत अधिक खर्च करना पड़ा।
(4) इसकी क्षतिपूर्ति के लिए सरकार ने कई करों को बढ़ा दिया तथा नए कर भी लगाए।
(5) इसी दौरान अपर्याप्त फसल के बावजूद सरकार की तरफ से न तो कोई मुआवजा दिया गया और न ही किसी तरह की आर्थिक सहायता दी गई। इस बात को लेकर लोगों में असंतोष पैदा हुआ।

प्रश्न 31. प्रथम विश्वयुद्ध के पश्चात् भारत पर पड़े आर्थिक प्रभावों का वर्णन कीजिए।

अथवा

प्रथम विश्व युद्ध का भारत की आर्थिक परिस्थितियों पर क्या प्रभाव पड़ा?

उत्तर- (1) प्रथम विश्वयुद्ध 1914 से 1918 तक चला। इस कारण भारतीयों पर भयंकर आर्थिक बोझ पड़ा। सीमा शुल्क तथा आय-कर बढ़ गया। कीमतें आसमान छूने लगीं।
(2) आम आदमी के लिए दो वक्त की रोटी का जुगाड़ कठिन हो गया। उपज नष्ट हो गयी थी तथा खाद्यान्न की कीमतों में बहुत वृद्धि हो गयी।
(3) रूस में साम्यवादी सरकार की स्थापना का भी राष्ट्रीय आंदोलन पर बड़ा अच्छा प्रभाव पड़ा क्योंकि रूस ने अपने अधीन सभी देशों को स्वतंत्र कर दिया था। अतः, भारतीय स्वतंत्रता के आंदोलनकारियों को इससे नैतिक बल मिला।
(4) विश्वयुद्ध में तुर्की की हार ने भारतीय मुसलमानों को अंग्रेजों के विरुद्ध कर दिया।
(5) भारतीय जन-साधारण की आशाओं पर पानी फिर गया। युद्ध के पश्चात् महँगाई और अंग्रेजों के अत्याचार समाप्त नहीं हुए। इससे हिंदू-मुस्लिम एकता सुदृढ़ हुई और लाखों भारतीय स्वतंत्रता संग्राम से जुड़ गये।

प्रश्न 32. रॉलट एक्ट क्या था? इस एक्ट के प्रति भारतीयों ने अपनी असहमति किस प्रकार प्रदर्शित की?

अथवा

भारतीयों ने रॉलट एक्ट का विरोध कैसे किया?

अथवा

1919 का रॉलट एक्ट क्या था? रॉलट एक्ट के प्रति लोगों की प्रतिक्रिया की व्याख्या कीजिए।

उत्तर-(1) रॉलट एक्ट ब्रिटिश सरकार द्वारा 1919 में लागू किया गया एक दमनकारी कानून था। इस कानून के जरिए सरकार को राजनीतिक गतिविधियों को कुचलने और राजनीतिक कैदियों को दो साल तक बिना मुकदमा चलाए जेल में बंद रखने का अधिकार मिल गया था।
(2) भारतीय लोगों ने निम्न तरीके से इस कानून को नकार दिया
(i) विभिन्न शहरों में रैली-जुलूसों का आयोजन किया गया। रेलवे वर्कशॉप में कामगार हड़ताल पर चले गए तथा कार्यालयों को बंद कर दिया गया।
(ii) गांधीजी ने 6 अप्रैल, 1919 को इस अन्यायपूर्ण कानून के ख़िलाफ़ हड़ताल की शुरुआत की।
(iii) डा० सत्यपाल तथा डा० सैफुद्दीन किचलू ने अपनी गिरफ्तारियाँ दीं।
(iv) अमृतसर के जलियाँवाला बाग में एक शांतिपूर्ण विरोध रैली का आयोजन किया गया।
(v) इन नेताओं की गिरफ्तारी के विरोध में बैठक दौरान जलियाँवाला बाग हत्याकांड हुआ जिसमें सैकड़ों निर्दोष लोगों की जानें गईं। इसका पूरे देश में व्यापक विरोध हुआ।

प्रश्न 33. असहयोग के विषय में अपनी प्रसिद्ध पुस्तक 'हिंद स्वराज' में व्यक्त गांधीजी के विचारों की व्याख्या कीजिए।

उत्तर- गांधीजी ने अपनी पुस्तक 'हिंद स्वराज' में भारत में ब्रिटिश शासन की सफलता के कारणों की व्याख्या की और यह भी बताया कि किस प्रकार इस शासन का अंत असहयोग आंदोलन से हो जाएगा।
(1) उनके अनुसार, भारत में ब्रिटिश शासन भारतीयों के सहयोग से ही स्थापित हुआ था और यह शासन इसी सहयोग के कारण चल पा रहा है।
(2) अगर भारत के लोग अपना सहयोग वापस ले लें तो साल-भर के भीतर ब्रिटिश शासन ढह जाएगा।
(3) असहयोग आंदोलन की सफलता से ही भारतीय लोगों के लिए स्वराज की स्थापना हो जाएगी।

प्रश्न 34. सत्याग्रह क्या था? भारत में गांधीजी द्वारा प्रारंभ किए गए तीन मुख्य सत्याग्रहों की व्याख्या कीजिए।

अथवा

भारत वापस आने पर महात्मा गांधी ने किन तीन प्रमुख समस्याओं को सुलझाने के लिए सत्याग्रह को अजमाया ?

अथवा

दक्षिण अफ्रीका से वापस भारत आने पर गांधीजी द्वारा चलाए गए सत्याग्रह पर आधारित तीन आंदोलनों की व्याख्या कीजिए।

अथवा

महात्मा गांधी ने भारत में पहुंचने के बाद विभिन्न स्थानों पर सत्याग्रह आंदोलन सफलतापूर्वक कैसे चलाए? तीन उदाहरण देकर स्पष्ट कीजिए।

अथवा

गांधीजी द्वारा कौन-से तीन प्रारंभिक सत्याग्रह चलाए गए ?

उत्तर- (1) सत्याग्रह के विचार में सत्य की शक्ति पर आग्रह और सत्य की खोज पर बल दिया जाता था। इस विचार के अनुसार यदि आपका उद्देश्य सच्चा है, और आपका संघर्ष अन्याय के खिलाफ है तो उत्पीड़क से मुकाबला करने के लिए आपको किसी शारीरिक बल की आवश्यकता नहीं है।

(2)" भारत में गांधीजी द्वारा आयोजित शुरुआती तीन सत्याग्रह निम्नलिखित हैं

(i) उन्होंने 1916 में बिहार के चंपारन जिले में दमनकारी बागान व्यवस्था के ख़िलाफ़ किसानों को संघर्ष के लिए प्रेरित किया।
(ii) उन्होंने 1917 में गुजरात के खेड़ा जिले में किसानों की मदद के लिए सत्याग्रह का आयोजन किया। फसल खराब होने के कारण किसान लगान चुकाने की स्थिति में नहीं थे। वे चाहते थे कि लगान वसूली में ढील दी जाए।
(iii) 1918-गांधीजी ने अहमदाबाद में सूती कपड़ा कारखानों के मजदूरों के बीच सत्याग्रह की शुरुआत की।

प्रश्न 35. ख़िलाफ़त कमिटी की स्थापना कब और कहाँ हुई थी? इसके उद्देश्य क्या थे?

उत्तर- (1) ख़िलाफ़त कमिटी की स्थापना बबई में हुई थी।
(2) इसकी स्थापना मार्च 1919 में हुई थी।
(3) इसकी स्थापना तुर्की के पराजित हो जाने पर मित्र राष्ट्रों द्वारा उसकी बहुत-सी बस्तियों को आपस में अन्यायपूर्ण ढंग से बाँटने के विरोध में हुई थी। मित्र राष्ट्रों द्वारा आटोमन साम्राज्य पर बहुत कठोर साँध थोप दी गई।

प्रश्न 36. असहयोग आंदोलन के विभिन्न चरणों का वर्णन कीजिए।

अथवा

महात्मा गांधी द्वारा असहयोग आंदोलन के संबंध में सुझाए गए तीन प्रस्ताव क्या थे?

अथवा

महात्मा गांधी के असहयोग आंदोलन के विभिन्न चरणों को वर्णित कीजिए।

अथवा

महात्मा गांधी द्वारा असहयोग आंदोलन के सन्दर्भ में सुझाए गए तीन मुख्य प्रस्तावों का उल्लेख कीजिए किस घटना के कारण इस आंदोलन को वापस लिया गया?

अथवा

गांधीजी के अनुसार असहयोग आंदोलन के विभिन्न चरण क्या होने चाहिए?

उत्तर- महात्मा गांधी के अनुरोध पर ही कांग्रेस ने 1920 में नागपुर में होने वाले अपने अधिवेशन में असहयोग आंदोलन के प्रस्ताव को पास किया। यह आंदोलन सफल रहे और इसमें भारत की आम जनता बढ़-चढ़ कर भाग ले, इस विचार से महात्मा गांधी ने अपने कुछ सुझाव दिये
(1) असहयोग आंदोलन की प्रगति और विस्तार धीरे-धीरे कुछ खंडों में होगा। पहले पखवाड़े में वे सभी भारतीय अपने सभी प्रशस्तिपत्र और तमगे अंग्रेजी सरकार को वापस कर देंगे। ऐसे नेताओं में स्वयं महात्मा गांधी और रबीन्द्रनाथ टैगोर जैसे लोग भी सम्मिलित थे।
(2) इसके पश्चात् सभी भारतीय अपनी सरकारी नौकरियों का बहिष्कार करेंगे जिनमें सभी सेना, पुलिस, न्यायालयों, स्कूलों के अधिकारी और संविधान सभाओं के सदस्य सम्मिलित हैं। इसके साथ-साथ वे सभी विदेशी वस्तुओं का बहिष्कार करेंगे। (3) यदि सरकार जबर्दस्ती पर आ जाए और बलपूर्वक इस आंदोलन को दबाना चाहे तो सविनय अवज्ञा आंदोलन या शांतिमय ढंग से सरकार का विरोध किया जाए।

प्रश्न 37. आर्थिक मोर्चे पर असहयोग आंदोलन के प्रभावों को स्पष्ट कीजिए।

उत्तर- असहयोग आंदोलन का भारत के आर्थिक क्षेत्र में भारी प्रभाव पड़ा। इंग्लैंड की अर्थव्यवस्था भी इससे प्रभावित हुई।
(1) विदेशी वस्तुओं का बहिष्कार किया गया।

(2) शराब की दुकानों पर पिकेटिंग की गई।
(3) विदेशी कपड़ों की होली जलाई गई। 1921 से 1922 के बीच विदेशी कपड़ों का आयात आधा रह गया। इसका मूल्य 102 करोड़ रुपयों से 57 करोड़ रह गया।
(4) बहुत सारे स्थानों पर व्यापारियों ने विदेशी चीजों का व्यापार करने या विदेशी व्यापार में पैसा लगाने से इंकार कर दिया।
(5) आयातित कपड़े को छोड़कर लोग भारतीय कपड़े पहनने लगे, तो भारतीय कपड़ा मिलों और हथकरघों का उत्पादन भी बढ़ने लगा। इसका प्रभाव भारत और इंग्लैंड दोनों की अर्थव्यवस्था पर पड़ा।

प्रश्न 38: 1921 तक किसने स्वराज का झंडा तैयार किया था? स्वराज के इस झंडे की मुख्य विशेषताओं को स्पष्ट कीजिए।

अथवा

बंगाल में स्वदेशी आंदोलन किस प्रकार का झंडा तैयार किया गया था? उस की मुख्य विशेषताओं को स्पष्ट करें।

उत्तर:1921 तक गाँधी जी ने स्वराज का झण्डा' तैयार कर लिया था। स्वराज के इस झण्डे की मुख्य विशेषताएं:
(i) यह तिरंगा झण्डा लाल, हरा और सफेद था।
(ii) इसके मध्य में चरखा था।
(iii) यह गाँधीवादी विचार स्वावलंबन का प्रतीक था।
(iv) जुलूसों में झण्डा थामे चलना शासन के प्रति अवज्ञा का संकेत बना।

प्रश्न 39 "असम में बागानी मजदूरों की महात्मा गांधी के विचारों और स्वराज के बारे में अपनी अलग अवधारणा थी।" तर्क देकर इस कथन की पुष्टि करें कीजिए।

उत्तर : (i) 1859 के इनलैंड इमिग्रेशन एक्ट के अनुसार बागानों में काम करने वाले मजदूरों को बिना इजाजत बागान से बाहर जाने की छूट नहीं थी और इस प्रकार की अनुमति बहुत ही कम मिलती थी।
(ii) जब उन्होंने असहयोग आंदोलन के विषय में सुना तो हजारों मजदूरों ने अपने अधिकारियों की अवहेलना करनी प्रारंभ कर दी। वे बागान को छोड़कर अपने घर की ओर चल दिए।
(iii) उनका अनुमान था कि अब गाँधी राज आ गया है। अतः प्रत्येक व्यक्ति को गाँव में जमीन दी जाएगी लेकिन वे अपनी मंजिल तक पहुँचने में असमर्थ रह गये।

प्रश्न 40 19वीं शताब्दी के भारत में भारतीय साहित्य के विकास में राष्ट्रीय चेतना उत्पन्न करने में कैसे मदद की?

उत्तर: राष्ट्रीय चेतना उत्पन्न करने में भारतीय साहित्य तथा समाचार पत्रों का भी काफी योगदान रहा है। इनके माध्यम से राष्ट्रवादी तत्त्वों को सत्त प्रेरणा और प्रोत्साहन मिलता रहा। उन दिनों भारत में विभिन्न भाषाओं में समाचार पत्र प्रकाशित होते थे, जिनमें राजनीतिक अधिकारों की माँग की जाती थी। इसके अतिरिक्त उनमें ब्रिटिश सरकार की दमनकारी नीति की भी कड़ी आलोचना की जाती थी। उस समय प्रसिद्ध समाचार पत्रों में संवाद् कौमुदी, बाम्बे समाचार (1882), बंगदूत (1831), गस्तगुफ्तार (1851), अमृतबजार पत्रिका (1868), ट्रिब्यून (1877), इण्डियन मिरर, हिन्दू, पैट्रियाट, बंगलौर, सोमप्रकाश, कामरेड, न्यु इण्डियन केसरी, आर्य दर्शन एवं बन्धवा आदि के नाम विशेष रूप से उल्लेखनीय हैं। बंकिम चंद्र चटर्जी, दीनबंधु मिश्रा, हेमचंद्र बनर्जी, नवीनचंद्र सेन, रविंद्रनाथ टैगोर आदि महान साहित्यकारों ने अपने लेखों द्वारा भारतीयों में राष्ट्रीय चेतना की एक नई जान फूंक दी।

प्रश्न 41 असहयोग आंदोलन के शुरू किए जाने के क्या कारण थे इसे आरंभ किए जाने के पीछे गांधी जी की पुस्तक हिंद स्वराज में वर्णित विचार का क्या हाथ था?

अथवा

असहयोग किस प्रकार आंदोलन बन सका? उदाहरण सहित स्पष्ट कीजिए।

उत्तर: गांधीजी हिंद स्वराज में बतलाते हैं कि -
(1) आपके मन का राज्य स्वराज है।
(2) आपकी कुंजी सत्याग्रह, आत्मबल या करूणा बल है।

(3) उस बल को आजमाने के लिए स्वदेशी को पूरी तरह अपनाने की जरूरत है।
(4) हम जो करना चाहते हैं वह अंग्रेजों को सजा देने के लिए नहीं करें, बल्कि इसलिए करें कि ऐसा करना हमारा कर्तव्य है। मतलब यह कि अगर अंग्रेज नमक-कर रद्द कर दें, लिया हुआ धान वापस कर दें, सब हिन्दुस्तानियों को बड़े-बड़े ओहदे दे दें और अंग्रेजी लश्कर हटा लें, तब भी हम उनकी मिलों का कपड़ा नहीं पहनेंगे, उनकी अंग्रेजी भाषा काम में नहीं लायेंगे और उनकी हुनर-कला का उपयोग नहीं करेंगे। हमें यह समझना चाहिए कि हम वह सब दरअसल इसलिए नहीं करेंगे क्योंकि वह सब नहीं करने योग्य है।

प्रश्न 42 मुस्लिम लीग की स्थापना कब हुई? 1906 से 1940 ईस्वी तक के काल में मुस्लिम लीग की नीतियों का संक्षेप में वर्णन कीजिए। मुस्लिम लीग ने पाकिस्तान की स्थापना की मांग कब उठाई?
उत्तर: मुस्लिम लीग की स्थापना 30 सितंबर सन् 1906 में हुई थी ।
हिंदुओं के बहुमत का शासन स्थापित हो जाने के डर से और अंग्रेजों की 'फूट डालो राज करो' की नीति के कारण मुस्लिम लीग की स्थापना हुई। इसकी स्थापना आगा खां ने की थी। इसके प्रमुख नेता मोहम्मद अली जिन्ना थे।
1906 से 1940 तक के काल में मुस्लिम लीग की नीतियां निम्नलिखित थी-
1.भारतीय मुसलमानों को राजनीतिक अधिकारों एवं हितों की रक्षा करना।
2.मुसलमानों को काम के शुभ कांग्रेश के प्रभाव से परे रखना।
3.मुसलमानों के लिए आर्थिक सुधारों की मांग करना ।
4. मुसलमानों के लिए पृथक निर्वाचन मंडल स्थापित करवाना।
5. अलग राज्य की मांग करना।
मुस्लिम लीग ने 1940 में पाकिस्तान की मांग उठाई।

प्रश्न 43 "पृथक निर्वाचन पद्धति ने भारत विभाजन का मार्ग प्रशस्त किया।" व्याख्या कीजिए।
उत्तर: पृथक निर्वाचन पद्धति से अभिप्राय यह है कि धर्म के आधार पर अपने ही धर्म के लोगों को वोट करना। पृथक निर्वाचन पद्धति अंग्रेजों द्वारा जानबूझकर भारतीय हिंदू और मुसलमानों में फूट डालने के लिए लागू की। अंग्रेज चाहते थे कि राष्ट्रीय आंदोलनों को मजबूती ना मिले। इस पद्धति के बाद से ही मुसलमानों ने अलग राज्य की मांग कर दी थी।

प्रश्न 44 देहात में ऐसे असहयोग आंदोलन फैलने का वर्णन कीजिए।
अथवा
असहयोग आंदोलन के दिनों में अवध के किसानों द्वारा सामना की गई किन्हीं तीन समस्याओं का वर्णन कीजिए।
अथवा
असहयोग आंदोलन किस प्रकार देहात में फैला और किसानों व आदिवासियों को संघर्ष में शामिल किया ? व्याख्या कीजिए।
उत्तर: असहयोग आंदोलन शुरू होने के बाद धीरे धीरे यह गांव में फैलता चला गया।
अंग्रेजों के कहने पर अवध के जमीदारों ने किसानों से भारी भरकम लगा लेना शुरू कर दिया था
किसानों को बेगार करनी पड़ती थी। उन्हें जमीदारों के खेतों पर बिना वेतन के काम करना पड़ता था।
किसानों से मनमर्जी से जमीनों के पट्टे छीन लिए जाते थे।
ग्रामीण लोगों को साहूकारों ने तो तंग किया ही साथ साथ अंग्रेजों ने भी बुरा बर्ताव किया।
इससे तंग आकर लोगों ने गांधी जी के असहयोग आंदोलन में बढ़चढ़ कर भाग लिया।

प्रश्न 45 कांग्रेस संगठन में महिलाओं को किसी भी महत्वपूर्ण पद पर जगह देने से क्यों इसकी जा रही थी? महिलाओं ने सविनय अवज्ञा आंदोलन में किस प्रकार भाग लिया? स्पष्ट कीजिए।
उत्तर:
(1) गाँधी जी का मानना था कि घर चलाना, चूल्हा चौका संभालना, अच्छी माँ व अच्छी पत्नी की भूमिकाओं का निर्वाह करना ही औरत का असली काम है।

(2) संगठन में उनकी प्रतीकात्मक उपस्थिति में ही काँग्रेस की सोच थी।इसलिए लम्बे समय तक काँग्रेस संगठन में महिलाओं को महत्त्वपूर्ण पद देने में हिचकिचाती रही।

सविनय अवज्ञा आंदोलन में महिलाओं की भागीदारी
(1) महिलाओं ने शराब, अफीम एवं विदेशी कपड़े की दुकानों पर जाकर धरना
(2) समस्त विदेशी वस्तुओं का बहिष्कार करते हुए उन्हें जला दिया।
(3) नमक कानून उल्लंघन करके स्वयं द्वारा नमक बनाया।

प्रश्न 46 भारत छोड़ो आंदोलन (1942) का विवरण दीजिए।
उत्तर- 1942 के भारत छोड़ो आंदोलन को ले जाने वाली घटनाएँ-1941 ई० के अंत में अंग्रेज़ों और जापानियों में आपसी लड़ाई प्रारम्भ हो गई। जापान ने शीघ्र ही फिलीपीन्स, इण्डो-चीन, मलाया और बर्मा आदि पर अधिकार कर लिया और इस प्रकार लड़ाई भारत के दरवाजे पर आ खड़ी हुई। क्योंकि उस समय भारत अंग्रेज़ों के अधीन था इसलिए ऐसा भव पैदा हो गया कि जापान भारत पर भी अवश्य आक्रमण करेगा। भारत को जापानी आक्रमण से बचाने के लिए महात्मा गाँधी के नेतृत्व में इंडियन नेशनल कांग्रेस ने अपनी बम्बई की एक बैठक में 'भारत छोड़ो' (Quit India) प्रस्ताव को पास किया। महात्मा गाँधी सहित बहुत से भारतीय नेताओं का ऐसा विचार था कि यदि अंग्रेज़ भारत छोड़ जाएँगे तो भारत जापानियों के आक्रमण से बच सकता है। बम्बई की बैठक में यह निश्चित किया गया कि भारतीय पूर्ण स्वतन्त्रता से कम किसी भी चीज़ से संतुष्ट नहीं होंगे।

परन्तु कांग्रेस द्वारा आंदोलन शुरू करने से पहले ही अंग्रेज़ी सरकार ने जोरदार चोट की और 9 अगस्त की सुबह को महात्मा गाँधी और अन्य नेताओं को गिरफ्तार कर लिया। इस घटना से सारा देश भौंचक्का-सा रह गया। किसी नेतृत्व के अभाव में लोगों ने रेलवे स्टेशनों, डाकखानों, थानों आदि पर आक्रमण किए और अनेक इमारतों को जला दिया। कई स्थानों पर सामानान्तर सरकारें भी स्थापित हो गयीं। परन्तु सरकार ने भी अपना दमन-चक्र तेज कर दिया और अनेक लोगों को जेल
में भेज दिया। ऐसा विश्वास है कि पुलिस और सेना की गोलियों से 10,000 से भी अधिक लोग मौत का शिकार हुए भारत 1857 ई० के बाद इतना घोर दमन पहले कभी नहीं हुआ था। अंत में चाहे सरकार 1942 ई० के इस आंदोलन को कुचलने असफल हो गयी परन्तु इस आंदोलन ने यह सिद्ध कर दिया कि राष्ट्रीय भावना देश के कोने-कोने में व्याप्त है और बलिदान देने के लिए तैयार है।
भारत छोड़ो आंदोलन का राष्ट्रीय आंदोलन पर प्रभाव या यह आंदोलन कहाँ तक सफल रहा ?- निस्संदेह ब्रिटिश सरकार ने दूसरे विश्व युद्ध की परिस्थितियों को देखते हुए भारत छोड़ो आंदोलन को दबानरे का हर संभव प्रयत्न किया परन्तु लोगों ने भी और ज़ोर से ब्रिटिश सरकार के अत्याचारों का विरोध किया। वे खुले विद्रोह पर उतर आये। उन्होंने सरकारी सम्पत्ति को बड़ी हानि पहुँचाई। ऐसे कार्यों से लोगों के धैर्य और स्वतन्त्रता के प्रति दृढ़ निश्चय का पूर्ण परिचय मिलता है। वे अत्याचारों की परवाह न करते हुए स्वतन्त्रता की ओर आगे बढ़ने लगे।

ब्रिटिश सरकार भारतीयों के इस उत्साह और दृढ़ निश्चय को देखकर काफी घबरा गई और सोचने को मजबूर हुई कि भारत में अब उनके दिन गिने-चुने रहे गये हैं।

प्रश्न 47. अंग्रेज़ों ने (1945 ई०) के बाद किन कारणों से भारत के प्रति अपना रुख बदला ?
उत्तर-1945 के बाद या दूसरे विश्व युद्ध के पश्चात् भारतीय राष्ट्रीय आंदोलन को अनेक आंतरिक तथा बाह्य तयों के कारण बड़ा प्रोत्साहन मिला। देखते ही देखते अंग्रेजों की भारत के प्रति नीति में परिवर्तन दृष्टिगोचर होने लगा इस सारे परिवर्तन के मुख्य कारण या पक्ष निम्नलिखित थे-
(1) द्वितीय विश्व युद्ध ने विश्व में शक्ति-संतुलन को बदल दिया। इंगलैंड युद्ध के बाद अब विश्व की एक महान शक्ति न रह सका। यह स्थान यू०एस०ए० एवं रूस ने ले लिया।
(2) युद्ध के बाद उभरने वाली नयी शक्तियों ने जैसे यू०एस०ए० तथा रूस आदि ने भारत को स्वतन्त्रता दिए जाने को माँग का समर्थन किया।
(3) ब्रिटेन में सत्ता परिवर्तन होने से लेबर पार्टी की नयाँ सरकार बनी इस नयी सरकार के अनेक सदस्यों ने सत्ता संभालने से पहले कांग्रेस की मांगों का समर्थन किया था।
(4) भारतीय जनता का स्वतन्त्रता प्राप्ति के लिए विश्वासपूर्ण और कृतसंकल्प मनोभाव सरकार के सामने अब तक स्पष्ट हो चुका था। लीग विदेशी शासन को और अधिक सहन करने को तैयार नहीं थे
(5) नौसैनिकों के विद्रोह ने सिद्ध कर दिया कि राष्ट्रवादी आंदोलन भारतीय सेना में भी प्रवेश कर चुका है।

(6) देश में होने वाली व्यापक हड़तालों ने भी भारतीय जनता, विशेषकर किसान तथा मजदूर वर्ग के बीच पायी जाने वाली अशांति एवं असंतोष को स्पष्ट कर दिया।

प्रश्न 48 सविनय अवज्ञा आंदोलन में व्यवसाई वर्ग की भूमिका का मूल्यांकन कीजिए।

अथवा

सविनय अवज्ञा आंदोलन के प्रति भारतीय व्यापारियों और उद्योगपतियों द्वारा अपनाए गए रुख को स्पष्ट कीजिए।

उत्तर-जैसा कि पहले कहा गया है कि विदेशी शासन ने भारतीय समाज के हर वर्ग के लोगों की मुसीबतों को बढ़ा दिया, इनमें व्यापारी और उद्योगपति भी थे। उन्होंने सविनय अवज्ञा आंदोलन में आगे बढ़कर भाग लिया जिसके कुछ मुख्य कारण निम्नलिखित है

(1) व्यापारियों और उद्योगपतियों ने सविनय अवज्ञा आंदोलन में इसलिए भाग लिया क्योंकि वे औपनिवेशिक नीतियों के विरुद्ध थे जिसने उनकी व्यावसायिक गतिविधियों में रुकावट डाल दी थी।

(2) वे सरकार की आयात नीति के भी विरुद्ध थे। वे अपने उद्योगों को बचाने के लिए विदेशी वस्तुओं के आयात पर रोक लगाना चाहते थे जिसके लिए अंग्रेज़ी सरकार तैयार न थी।

(3) बहुत से व्यापारियों और उद्योगपतियों का यह विचार था कि सविनय अवज्ञा आंदोलन के परिणामस्वरूप उन्हें विदेशी नियंत्रण से मुक्ति मिल जाएगी और उनकी व्यावसायिक गतिविधियों पर कोई रोक नहीं होगी। ऐसे में उनके उद्योग पनपते रहेंगे और परिणामस्वरूप उनका जीवन सुखमय बन जाएगा।

(4) जी०डी० बिरला (G.D. Birla) जैसे उद्योगपतियों ने स्वतन्त्रता संघर्ष में महात्मा गाँधी जैसे राष्ट्रीय नेताओं को अनेक प्रकार से सहायता की, जिसके परिणामस्वरूप भारतीय राष्ट्रीय आंदोलन को बड़ी तीव्रता मिली।

<u>स्त्रोत आधारित प्रश्न 1:-</u>

जनवरी 1921 में असहयोग आंदोलन के शुरू होने के बाद इस आंदोलन में विभिन्न सामाजिक समूहों ने अपनी अपनी आकांक्षाओं के साथ भाग लिया। सभी ने स्वराज के आवाहन को स्वीकार तो किया लेकिन उनके लिए उसके अर्थ अलग-अलग थे आंदोलन की शुरुआत शहरी मध्यम वर्ग की हिस्सेदारी के साथ हुई । हजारों विद्यार्थियों ने स्कूल कॉलेज छोड़ दिए हेड मास्टरों और शिक्षकों ने इस्तीफे सौंप दिए। वकीलों ने मुकदमे लड़ना बंद कर दिया। ज्यादातर प्रांतों में परिषद चुनावों का बहिष्कार किया गया, विदेशी सामानों का बहिष्कार किया गया, शराब की दुकानों की पिकेटिंग की गई और विदेशी कपड़ों की होली जलाई जाने लगी | 1921 से 1922 के बीच विदेशी कपड़ों का आयात आधा रह गया था. उसकी कीमत 102 करोड़ से घटकर 57 करोड़ रह गई। बहुत सारे स्थानों पर व्यापारियों ने विदेशी चीजों का व्यापार करने से इंकार कर दिया और लोग आयातित कपड़ों को छोड़कर केवल भारतीय कपड़े पहनने लगे । परिणाम स्वरूप भारतीय कपड़ा मिलों और हथकरघा का उत्पादन भी बढ़ने लगा। कुछ समय बाद शहरों में यह आंदोलन धीमा पड़ने लगा। खादी का कपड़ा मिलों में भारी पैमाने पर बनाने वाले कपड़ों के मुकाबले प्राय महंगा होता था और गरीब उसे खरीद नहीं सकते थे। ब्रिटिश संस्थानों के बहिष्कार से समस्या पैदा हो गई। वैकल्पिक भारतीय संस्थानों की स्थापना तेजी से नहीं हो पाई। फल स्वरूप विद्यार्थी और शिक्षक सरकारी स्कूलों में लौटने लगे और वकील दोबारा सरकारी अदालतों में जाने लगे।

प्रश्न असहयोग आंदोलन की शुरुआतकिस वर्ग की हिस्सेदारी के साथ हुई ?
प्रश्न- विदेशी वस्तुओं के आयात पर असहयोग आंदोलन का क्या प्रभाव पड़ा ?
प्रश्न- भारतीय कपड़ा मिलों और हथकरघा का उत्पादन बढ़ने का क्या कारण था ?
प्रश्न असहयोग आंदोलन धीमा क्यों पड़ा ?

<u>स्त्रोत आधारित प्रश्न 2:-</u>

सविनय अवज्ञा आंदोलन में विभिन्न सामाजिक समूहों की भागीदारी गांव में संपन्न किसान समुदाय जैसे गुजरात के पाटीदार और उत्तर प्रदेश के जाट आंदोलन में सक्रिय थे। उन्होंने अपने समुदायों को एकजुट किया और कई बार अनिश्चित सदस्यों को बहिष्कार के लिए मजबूर किया स्वराज की लड़ाई भारी लगान के खिलाफ लड़ी थी | दूसरी तरफ गरीब किसान चाहते थे कि उन्हें जमीदारों को जो भाडा चुकाना पड़ता है उसे माफ कर दिया जाए।

उन्होंने कई रेडिकल आंदोलनों में हिस्सा लिया, जिसका नेतृत्व अक्सर समाजवादियों और कम्युनिस्टों के हाथों में होता था भारतीय उद्योगपतियों ने आंदोलन को आर्थिक सहायता दी और आयातित वस्तुओं को खरीदने वह बेचने से इंकार कर दिया ज्यादातर व्यवसाई स्वराज को एक ऐसे युग के रूप में देखते थे, जहां कारोबार पर औपनिवेशिक पाबंदियां नहीं होंगी और व्यापार और उद्योग निर्बाध ढंग से फले फूल सकेंगे। औद्योगिक श्रमिक वर्ग ने सविनय अवज्ञा आंदोलन में नागपुर क्षेत्र के अलावा कहीं भी बहुत बड़ी संख्या में हिस्सा नहीं लिया। लेकिन कुछ मजदूरों ने आंदोलन में हिस्सा लिया। उन्होंने विदेशी वस्तुओं के बहिष्कार जैसे, कुछ गांधीवादी विचारों को कम वेतन व खराब कार्य स्थितियों के खिलाफ अपनी लड़ाई से जोड़ लिया था। 1930 में रेलवे कामगारों की और, 1932 में गोदी कामगारों की हड़ताल हुई। 1930 में छोटा नागपुर की खानों के हजारों मजदूरों ने गांधी टोपी पहनकर रैलियों और बहिष्कार अभियानों में हिस्सा लिया था। सविनय अवज्ञा आंदोलन में महिलाओं ने बढ़ चढ़कर हिस्सा लिया। उन्होंने जुलूस में हिस्सा लिया, नमक विदेशी कपड़ों और शराब की दुकानों की पिकेटिंग की।

प्रश्न किसानों के सविनय अवज्ञा आंदोलन में भाग लेने का मुख्य कारण क्या था ?
प्रश्न-व्यवसाई वर्ग ने सविनय अवजा आंदोलन में भाग क्यों लिया ?
प्रश्न-मजदूर वर्ग के सविनय अवज्ञा आंदोलन में जुड़ने का मुख्य कारण क्या था ?

MUKUTclasses